Gyanvividha, Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026 : PP-114-118

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No.- 114-118
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

1. विभूति नारायण ओझा
शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), नई दिल्ली 110016.

2. डॉ. सविता राय
शोध निर्देशिका, सहायक आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), नई दिल्ली 110016.

Corresponding Author :

विभूति नारायण ओझा
शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), नई दिल्ली 110016.

उच्चशिक्षा में अध्ययनरत छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन

सारांश : उच्च शिक्षा में अध्ययनरत छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षाएँ, उनके लिंग तथा परिवेश को गहराई से प्रभावित करती हैं, जिसके कारण इनके आधार पर सार्थक अंतर देखने को मिला है। लिंग के संदर्भ में समाज द्वारा निर्धारित भूमिकाएँ, पारिवारिक अपेक्षाएँ और सामाजिक रुढ़ियाँ छात्रों की सोच और करियर चयन को दिशा देती हैं। सामान्यतः पुरुष छात्रों को आत्मनिर्भर, प्रतिस्पर्धी तथा उच्च आय और प्रतिष्ठा वाले व्यवसायों की ओर प्रोत्साहित किया जाता है, जबकि महिला छात्रों से सुरक्षित, स्थिर और पारिवारिक दायित्वों के अनुकूल व्यवसाय चुनने की अपेक्षा की जाती है। इस सामाजिककरण का प्रभाव यह होता है कि उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद महिला छात्राएँ अपने व्यावसायिक लक्ष्यों को सीमित कर लेती हैं, वहीं पुरुष छात्र जोखिमपूर्ण एवं नेतृत्व आधारित क्षेत्रों की ओर अधिक आकृष्ट होते हैं। इसी प्रकार परिवेश भी व्यावसायिक आकांक्षाओं के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पारिवारिक परिवेश, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, शैक्षिक संस्थान, सांस्कृतिक मूल्य और तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता छात्रों की आकांक्षाओं को आकार देती है। शहरी, शिक्षित और उच्च सामाजिक-आर्थिक परिवेश से आने वाले छात्रों को विविध करियर विकल्पों की जानकारी, मार्गदर्शन तथा अवसर उपलब्ध होते हैं, जिससे उनकी व्यावसायिक आकांक्षाएँ व्यापक और उच्च स्तर की होती हैं। इसके विपरीत ग्रामीण या निम्न सामाजिक-आर्थिक परिवेश के छात्रों की आकांक्षाएँ संसाधनों की कमी, सीमित जानकारी और पारिवारिक दायित्वों के कारण अपेक्षाकृत संकुचित रहती हैं। इसके अतिरिक्त लिंग और परिवेश का संयुक्त प्रभाव भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, क्योंकि समान परिवेश में भी पुरुष और महिला छात्रों की आकांक्षाओं में अंतर पाया जाता है तथा समान लिंग होने पर भी भिन्न परिवेश के कारण आकांक्षाओं में भिन्नता उत्पन्न हो जाती है। सामाजिक सुरक्षा, कार्य-जीवन संतुलन, आत्मविश्वास, रोल मॉडल की उपलब्धता और भविष्य की

आर्थिक सुरक्षा जैसे कारक भी इस अंतर को और अधिक स्पष्ट करते हैं। इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उच्च शिक्षा में अध्ययनरत छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षाओं में लिंग तथा परिवेश के आधार पर सार्थक अंतर होना स्वाभाविक है, जो सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक मान्यताओं, अवसरों की असमानता और व्यक्तिगत अनुभवों का परिणाम है, तथा यदि समान अवसर, जागरूकता और सकारात्मक सामाजिक दृष्टिकोण विकसित किया जाए तो इन अंतरों को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

मुख्य शब्द- शिक्षा, उच्च शिक्षा, छात्र, आकांक्षा, व्यावसायिक आकांक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020।

भूमिका : मनुष्य के विकास का मुख्य साधन शिक्षा है। इसी के आधार पर मनुष्य दिन प्रतिदिन अपने शैक्षिक व्यावसायिक और सामाजिक वातावरण में अपने रुचियां के अनुसार बदलाव लाता रहता है। स्वतंत्रता के बाद से भारत में शैक्षिक विकास के लिए अनेक प्रयास किए गए, आयोग और विभिन्न शैक्षिक नीतियों के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था में व्यापक परिमार्जन दिखाई देता है। शिक्षा के प्राथमिक स्तर से लगाए उच्च प्राथमिक, माध्यमिक होते हुए जब विद्यार्थी उच्च शिक्षा तक पहुंचता है तो उसके अंदर अत्यधिक मात्रा में सोचने समझने की क्षमता विकसित हो चुकी होती है। उच्च शिक्षा के माध्यम से वह अपने आप को उस क्षेत्र के लिए तैयार करता है जिसके तरफ उसकी आकांक्षाएं होती हैं। यही विद्यार्थी जब किशोरावस्था की उम्र में होता है तो उसके मन में तरह-तरह के विचार आते रहते हैं लेकिन जब वह उच्च स्तर की शिक्षा पर पहुंचता है तो उसके में अनेक बदलाव दिखाई देने शुरु हो जाते हैं और वह तय करने की स्थिति में होता है की उसका शैक्षिक, व्यवसायिक, सामाजिक स्तर किस तरह का होना चाहिए। उच्च शिक्षा स्तर पर, छात्र अपनी शैक्षणिक और कैरियर आकांक्षाओं के आधार पर स्नातक और स्नातक डिग्री, जैसे बैचलर, मास्टर और डॉक्टरेट डिग्री प्राप्त करते हैं। पाठ्यक्रम पहले के शिक्षा चरणों की तुलना में अधिक विशिष्ट और अनुसंधान-उन्मुख है, जो महत्वपूर्ण सोच, विश्लेषणात्मक कौशल और स्वतंत्र अनुसंधान को प्रोत्साहित करता है।

व्यावसायिक आकांक्षा : व्यावसायिक आकांक्षा भविष्य के रोजगार के लिए व्यक्ति की इच्छाएं हैं। आकांक्षा एक मजबूत इच्छा है, जो उसे चाहते हैं,उसे प्राप्त करने में मदद् करते हैं। यदि वे सीधे इसके लिए काम करते हैं। भविष्य की आकांक्षा एक व्यक्ति से उभरती है बदले में यह किसी के मानदंडों, मूल्यों और विश्वासों को प्रभावित करती है। व्यक्ति की आकांक्षाओं को प्रभावित करने वाले कारक परिवार, शिक्षा, सामाजिक संस्था, सामुदायिक वातावरण आदि है। व्यावसायिक आकांक्षा से सीधा तात्पर्य रोजगार प्राप्ति से है । यदि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर दृष्टि डाले तो यह स्पष्ट होता है कि पूर्णतः व्यवसायिक शिक्षा पर बल देती है। प्रश्न यह है कि क्या हम सभी को व्यावसायी ही बनाना चाहते हैं? उच्च प्राथमिक स्तर से ही विद्यार्थी के मस्तिष्क में व्यवसाय रूपी शिक्षा पद्धति को भरने का प्रयास किया जा रहा है। आज सरकार भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा प्रावधानित व्यवस्था को क्रियान्वित करते हुए व्यावसायिक शिक्षा को पाठ्यक्रम का हिस्सा बना रही है। जब हम विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों का ज्ञान प्राप्त करेगें तो व्यवसाय के बारे में हमारा चिंतन बढ़ेगा और अपनी रुचि के अनुसार व्यावसायिक क्षेत्रों का चयन कर आगे बढ़ सकेगें।

अध्ययन की अवश्यकता : उच्च शिक्षा हासिल करने वाले प्रत्येक छात्र की यह आकांक्षा होती है कि वह अच्छी शिक्षा ग्रहण करके व्यावसायिक आकांक्षाओं को पूरा कर सके, लेकिन संस्थानिक वातावरण, संसाधन की उपलब्धता उसे उस योग्य तैयार कर पा रही है कि नही। किस स्तर तक संस्थान विद्यार्थियों की इन आकांक्षाओ को पूरा कर पा रहे है, इन विन्दुओ और आवश्यकताओं को देखते हुए इस विषय पर शोध कार्य करने की आवश्यता अनुभूत हुई। इस विषय के महत्व की व्यापकता इससे भी लगाई जा सकती है कि जो विद्यार्थी माध्यमिक शिक्षा ग्रहण करने के बाद उच्च शिक्षा में प्रवेश लेता है तो उसकी कल्पनाएं भी असीमित होती है, उन कल्पनाओं को ही वह साकार करने के लिए मेहनत करता है। विभिन्न संस्थान विद्यार्थियों की शैक्षिक और व्यावसायिक आकांक्षा के अनुरुप शिक्षा नहीं दे पाते जिसके कारण विद्यार्थी बिना किसी निश्चित लक्ष्य के शिक्षा ग्रहण करता है और भविष्य में स्नातक

बेरोजगार के रूप में समाज का अंग बनता है

शोध समस्या : उच्चशिक्षा मे अध्ययनरत छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन।

उद्देश्य

- छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन करना।
- लिंग के आधार पर छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन।
- परिवेश के आधार पर छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना

- उच्चशिक्षा मे अध्ययनरत छात्रों की लिंग के आधार पर व्यावसायिक आकांक्षा मे सार्थक अन्तर होता है।
- उच्चशिक्षा मे अध्ययनरत छात्रों की परिवेश के आधार पर व्यावसायिक आकांक्षा मे सार्थक अन्तर होता है।

विधि

- प्रस्तुत अध्ययन के विषय व स्वरूप देखते हुए प्रस्तुत अध्ययन मे विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

उपकरण

- व्यावसायिक आकांक्षा के मापन के लिए **एनपीएस चंदेल**, **डॉ विभा लक्ष्मी** , **रंजीत कुमार सिंह** द्वारा संयुक्त रूप से निर्मित प्रश्नावली **(OAS)** का प्रयोग किया गया।

प्रतिदर्श

- प्रस्तुत अध्ययन के लिए सोद्देश्य प्रतिदर्श के रूप में 50 उच्चशिक्षा मे अध्ययनरत छात्रों का चयन किया गया है जिसमे 20 पुरुष छात्र तथा 30 महिला छात्राओं को सम्मलित किया गया है।

सांख्यिकीय विधियाँ

- प्रदत्तों के विश्लेषण द्वारा अर्थपूर्ण बनाने के लिए मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी- मान सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

H_1 :उच्चशिक्षा मे अध्ययनरत छात्रों की लिंग के आधार पर व्यावसायिक आकांक्षा मे सार्थक अन्तर होता है।

तालिका संख्या 1

क्र.स.	**लिंग**	**संख्या**	**मध्यमान**	**मानक विचलन**	**मानक त्रुटि**	**टी – अनुपात**
1	**पुरुष**	**20**	55.8	10.44	3.1	2.75*
2	**महिला**	**30**	47.26	11.27		

***0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।**

***0.01 स्तर पर सार्थक मान- 2.69**

प्रदत्तों का प्रस्तुतिकरण : तालिका संख्या 1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि उच्चशिक्षा मे अध्ययनरत छात्रों (पुरुष) की व्यावसायिक आकांक्षा का मध्यमान (M 55.8) , मानक विचलन (S.D 10.44) एवं उच्चशिक्षा मे अध्ययनरत छात्रों (महिला) की व्यवसायिक आकांक्षा का मध्यमान (M 47.26), मानक विचलन (S.D 11.27) है। मध्यमानों के मध्य अन्तर की मानक त्रुटि 3.1 है तथा टी मान 2.75* है। जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः परिकल्पना 1 स्वीकृत की जाती है। उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि लिंग के आधार पर छात्रों की व्यवसायिक आकांक्षा मे सार्थक अन्तर होता है।

प्रदत्तों का व्याख्या : समाज में कुछ व्यवसायों को "पुरुषोचित" और कुछ को "स्त्रीोचित" माना जाता है। तकनीकी, रक्षा, राजनीति जैसे क्षेत्रों को पुरुष प्रधान समझा जाता है। देखभाल, शिक्षण, स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों को स्त्री प्रधान माना जाता है। ये रूढ़ियाँ छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षाओं को सीमित या निर्देशित करती हैं। उच्च शिक्षा में अध्ययनरत छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षाओं में लिंग के आधार पर सार्थक अंतर सामाजिक संरचना, पारिवारिक अपेक्षाओं, सांस्कृतिक मान्यताओं, अवसरों की असमानता तथा मनोवैज्ञानिक कारकों के कारण उत्पन्न होता है। यदि समाज में लिंग समानता, जागरूकता, अवसरों की समान उपलब्धता और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया जाए, तो यह अंतर क्रमशः कम किया जा सकता है।

H_2 : उच्चशिक्षा मे अध्ययनरत छात्रों की परिवेश के आधार पर व्यवसायिक आकांक्षा मे सार्थक अन्तर होता है।

तालिका संख्या 2

क्र.स.	**परिवेश**	**संख्या**	**मध्यमान**	**मानक विचलन**	**मानक त्रुटि**	**टी – अनुपात**
1	नगरीय	**20**	47.31	3.24	0.84	6.27*****
2	ग्रामीण	**30**	52.58	2.39		

***0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।**

***0.01 स्तर पर सार्थक मान- 2.69**

प्रदत्तों का प्रस्तुतिकरण : तालिका संख्या 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि उच्चशिक्षा मे अध्ययनरत नगरीय छात्रों की व्यवसायिक आकांक्षा का मध्यमान (M 47.31 , मानक विचलन (S.D 3.24 एवं उच्चशिक्षा मे अध्ययनरत ग्रामीण छात्रों की व्यवसायिक आकांक्षा का मध्यमान (M 52.58), मानक विचलन (S.D 2.39 है। मध्यमानों के मध्य अन्तर की मानक त्रुटि 0.84 है तथा टी मान 6.27* है। जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः परिकल्पना 2 स्वीकृत की जाती है । उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि परिवेश के आधार पर छात्रों की व्यवसायिक आकांक्षा मे सार्थक अन्तर होता है।

प्रदत्तों की व्याख्या : शहरी परिवेश में पले-बढ़े छात्र नवाचार, उद्यमिता और आधुनिक व्यवसायों की ओर अधिक आकृष्ट होते हैं। ग्रामीण परिवेश के छात्र पारंपरिक या स्थानीय स्तर के व्यवसायों को अधिक महत्व देते हैं। सामाजिक मूल्य, परंपराएँ और मान्यताएँ आकांक्षाओं की दिशा तय करती हैं। उच्च शिक्षा में अध्ययनरत छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षाओं में परिवेश के आधार पर सार्थक अंतर होना स्वाभाविक है। पारिवारिक, सामाजिक-आर्थिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं तकनीकी परिवेश मिलकर छात्रों की सोच, लक्ष्य और करियर चयन को प्रभावित करते हैं। अतः समान शैक्षिक अवसरों के साथ-साथ समान परिवेशीय अवसर प्रदान करना अत्यंत आवश्यक है ताकि सभी छात्र अपनी पूर्ण क्षमता के अनुरुप व्यावसायिक आकांक्षाएँ विकसित कर सकें।

शैक्षिक एवं सामाजिक निहितार्थ : पिछले दो दशक में जिस प्रकार से शिक्षा का व्यावसायीकरण बढ़ा है और अभी भी निरन्तर है, उसने पढ़ने वालो की विविध आकांक्षाओं को, उनके सपनों को तोड़ने का काम किया है। महंगी होती शिक्षा आम विद्यार्थी और समाज से दूर हो रही है। समाज के अंतिम वर्ग का विद्यार्थी आज भी शिक्षा और शैक्षिक वातावरण से कोसो दूर है। शिक्षा के निजीकरण और व्यावसायीकरण ने विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा को प्रभावित किया है। विद्यार्थी, परिवार, समाज और विद्यालय इन्हीं स्थानों पर अपना समय व्यतीत करता है। इससे विद्यालयी वातावरण का प्रभाव उसके मस्तिष्क में अधिक पड़ता है। आज संस्थान अपने व्यावसायिक लाभ की प्राप्ति

के लिए विद्यार्थियों के शैक्षिक व व्यावसायिक आकांक्षाओ पर ध्यान नहीं देते हैं। कड़ी प्रतिस्पर्धा में व्यावसायिक दिशाहीनता आज के अव्यवस्थित शैक्षिक वातावरण में विद्यार्थियों को सभी व्यवसायों की तरफ आकृष्ट होने को मजबूर कर रही है। आज आकांक्षाएं मूर्त रूप लेने में आंशिक ही सफल हो पा रही है। एनईपी 2020 में व्यावसायिक शिक्षा पर दिए गये बल का स्पष्ट संदेश है कि – "अमूमन सरकारी स्कूलों पढ़ने वाले बहुजन वर्गो के बच्चे 14 वर्ष की आयु पूरी करने के पहले ही किसी खास व्यावसायिक क्षेत्र में प्रशिक्षित किये जायेगे और शिक्षा की मुख्यधारा से बाहर कर दिये जाएंगें और उन्हें शासक वर्गों व जातियों की दासता तले रहने के लिए मजबूर कर दिया जाएगा। इसके विपरीत, अंग्रेजी माध्यम के निजी स्कूलों के बच्चे उच्च शिक्षा हासिल करेगें और भारत या विदेशों के कारपोरेट दुनिया में मोटी तनख्वाहों पर वैश्विक पूंजी की गुलामी करेंगे।

निष्कर्ष : उच्च शिक्षा हासिल करने वाले प्रत्येक छात्र की यह आकांक्षा होती है कि वह अच्छी शिक्षा ग्रहण करके व्यावसायिक आकांक्षाओं को पूरा कर सके, लेकिन संस्थानिक वातावरण, संसाधन की उपलब्धता उसे उस योग्य तैयार कर पा रही है कि नही। किस स्तर तक संस्थान विद्यार्थियों की इन आकांक्षाओ को पूरा कर पा रहे है, इन विन्दुओ और आवश्यकताओं को देखते हुए इस विषय पर शोध कार्य करने की आवश्यता अनुभूत हुई। इस विषय के महत्व की व्यापकता इससे भी लगाई जा सकती है कि जो विद्यार्थी माध्यमिक शिक्षा ग्रहण करने के बाद उच्च शिक्षा में प्रवेश लेता है तो उसकी कल्पनाएं भी असीमित होती है, उन कल्पनाओं को ही वह साकार करने के लिए मेहनत करता है। विभिन्न संस्थान विद्यार्थियों की शैक्षिक और व्यावसायिक आकांक्षा के अनुरूप शिक्षा नहीं दे पाते जिसके कारण विद्यार्थी बिना किसी निश्चित लक्ष्य के शिक्षा ग्रहण करता है और भविष्य में स्नातक बेरोजगार के रूप में समाज का अंग बनता है।

सन्दर्भ सूची :

1. आर.ए.शर्मा, शिक्षा अनुसंधान के मूलतत्व एवं शोध प्रविधि, मेरठ।
2. डॉ. एस.पी.गुप्ता, अनुसंधान संदर्शिका (2025), पृष्ठ 65
3. सिंघल, कु. वि. (2020), शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
4. शर्मा, आर.ए. (2009), शैक्षिक अनुसंधान, मेरठः लाल बुक डिपो
5. गुप्ता, एस.पी. (2009), सांख्यिकीय विधिया, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन इलाहबाद
6. https://shodganga.inflibnet.ac.in/cited on 5/10/2025
7. www.ncert.nic.in/publication/journals/journal.html/cited on 15/11/2025
8. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 https://g.co/kgs/Ky4fFkM/citedon 27/11/2025
9. http://www.gjesr.com/Issues%20PDF/Archive-2018/September-2018/33.pdf
10. https://socialresearchfoundation.com/upoadreserchpapers/5/230/1812030914471st%20murari%20singh%20yadav.pdf
11. http://www.ndl.gov.in/re_document/inflibnet_shodhganga/shodhganga/10603_270737

•